BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 1, January-March 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

भारत में नारी सशक्तिकरण: वर्तमान स्थिति, चुनौतियां एवं समाधान

जितेन्द्र कुमार
शोध छात्र
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग,
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

शोध सार:

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता' मनुस्मृति में उल्लिखित ये उक्ति स्त्री समाज के महात्म्य एवं भारतीय संस्कृति में आधी आबादी के स्थान को उद्घाटित करता है। परंतु, विडंबना देखिए कि उसी मुल्क में स्त्री-वर्ग को अपने हक के लिए, अपने अधिकारों की रक्षा के लिए न केवल आवाज बुलंद करनी होती है, बल्कि अपनी अस्मिता बचाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। मौजूदा दौर में, हमारे समाज ने महिला समुदाय को एक ऐसे हाशिये पर लाकर खड़ा कर दिया है, जहां हमें 21वीं सदी में आधी आबादी के सशक्तिकरण जैसे विषय पर चर्चा करनी पड़ रही है। पुरूष समाज का पाखंड अहंकार, गरीब मानसिकता और वैचारिक शून्यता महिला सशक्तिकरण के विरूद्ध काम करता रहा है। समाज के निचले सदन से लेकर राष्ट्र के सर्वोच्च सदन तक अगली पंक्ति में बैठने वाले तथाकथित लोकतंत्र के रखवालों की हीन भावनाओं ने महिला सशक्तिकरण को सबसे कमजोर करने का काम किया है।भारतीय सामाजिक संरचना पुरुष प्रधान है। पुरुष घर से बाहर काम करने जाते हैं एवं महिलाएं अपने घरेलू कार्य का संभालने में लगी रहती है। बच्चों का पालन-पोषण एवं परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करना उनका मुख्य कार्य है। आर्थिक उपार्जन उनका कार्य क्षेत्र नहीं रहा है। यद्यपि इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि प्राचीन काल से महिलाएँ प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं एवं कृषि कार्य में संलग्न रही हैं। आधुनिक युग में महिलाएं कामकाजी होने के साथ-साथ सफल गृहणियाँ भी सिद्ध हो रही है।लेकिन कभी किसी ने ध्यान नहीं दिया होगा कि महिलाएँ किस प्रकार सभी कार्यों का समायोजन करती होगी। वर्तमान युग में कामकाजी महिलाएँ बदलते हुए वैश्विक दौर में समय के साथ बदलते परिवेश के साथ अपना सामंजस्य करने में सक्षम हो रही है। सरकारी या निजी कार्यस्थल व घर के काम में अपने प्रबन्धन की भूमिका बखूबी से निभाती है। धीरे-धीरे शिक्षा का विकास होने लगा, नवीन तकनीकी प्रकाश से पुरुषों के समान प्रत्येक क्षेत्र में महिलाएं भी आगे आने लगी। भारत में औसतन प्रत्येक घर की महिलाएं घर के बाहर या घर पर कुछ ना कुछ आय अर्जन करने में लगी है। साथ-साथ अपने निजी जीवन को भी गतिशील रखने के प्रयास करती है। कामकाजी महिलाएं अपने परिवार और अपने भविष्य को संवारने के लिए कार्य करती है।

कुंजी शब्द: नारी सशक्तिकरण, लिंग-भेद, विकास, भारत

❖ परिचय:

भारत में महिला सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण और निरंतर विकसित हो रही प्रक्रिया है, जो महिलाओं को समाज में उनके अधिकारों, स्वतंत्रता और बराबरी का अनुभव कराने के लिए प्रेरित करती है। ऐतिहासिक रूप से भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति कमजोर रही है, जहाँ उन्हें कई सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा। लेकिन समय के साथ महिलाओं के अधिकारों को लेकर जागरूकता बढ़ी है, और सरकार, समाज और विभिन्न संस्थाओं ने महिला सशक्तिकरण के लिए कई पहल की हैं। महिला सशक्तिकरण का मतलब सिर्फ शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और स्वास्थ्य तक पहुँच

@2025 Bihar Shodh Samaagam

नहीं है, बल्कि यह महिलाओं को उनके अधिकारों की पहचान कराना, उन्हें निर्णय लेने की शक्ति देना और सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में उनकी भागीदारी बढ़ाना भी है। बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ जैसी योजनाएँ, महिलाओं के लिए आरक्षण, और महिला सुरक्षा के कानूनों के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने की दिशा में कई कदम उठाए गए हैं। हालांकि, इस यात्रा में अभी भी कई चुनौतियाँ हैं, जैसे लैंगिक भेदभाव, महिला हिंसा, और रूढ़िवादी सोच, जिनसे निपटना जरूरी है। महिला सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़ने के लिए समाज के सभी हिस्सों को मिलकर काम करना आवश्यक है, ताकि हर महिला को समान अधिकार और अवसर मिल सकें। भारत में कुल 73 प्रतिशत साक्षरता, ग्रामीण क्षेत्र में 57.9, शहरी क्षेत्र में 79.1 प्रतिशत रही है। महिला शिक्षा के बढ़ते स्तर ने महिलाओं को कामकाजी होने की प्रेरणा दी है। फलतः, उनकी प्रवृत्ति कामकाजी हो गयी है। आज वे विविध भूमिका का निर्वाह कर रही है. आज वे सभी क्षेत्रों में पुरुषों के समान पदों पर आसीन है। राजनीतिक सत्ता का क्षेत्र हो या आई.ए.एस. ऑफिसर की कुर्सी, अभिनय की अभिव्यक्ति हो या नृत्यांगना का नृत्य, साहित्य का क्षेत्र, ललित कला, आंगन, राग-रागिनीयों की सरगम हो या चित्रकारी की चितेरी, चिकित्सक या कानूनी सलाहकार प्रशासन का क्षेत्र हो या शिक्षिका प्रोफेसर का दायित्व, ज्ञान विज्ञान हो या कलात्मक प्रस्तुति, महिलाओं के कामकाज का विस्तार सभी क्षेत्रों में हुआ है। कामकाजी महिलाएं अपनी योग्यता से न केवल धन अर्जित करती है, अपितु वे अर्जित धन से पारिवारिक आर्थिक संरचना में अपना योगदान देकर आर्थिक संबल प्रदान करती है। महिलाओं का आर्थिक उपार्जन आर्थिक क्षेत्र में उनकी आत्म निर्भरता को प्रदर्शित करता है

❖ **नारी सशक्तिकरण -संकलात्मक पक्ष:**

महिला सशक्तिकरण का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को उनके अधिकारों, स्वतंत्रता और समान अवसरों के प्रति जागरूक करना और उन्हें समाज के हर क्षेत्र में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करना है। यह न केवल उनके सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक विकास के लिए अवसर प्रदान करता है, बल्कि उन्हें निर्णय लेने की स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता भी देता है। महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य महिलाओं को समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाना है, ताकि वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें और समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकें। यह महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, और रोजगार के समान अवसर प्रदान करने के साथ-साथ घरेलू हिंसा, भेदभाव, बाल विवाह, और अन्य सामाजिक कुरीतियों से मुक्त करना भी है। आज के समय में कामकाजी महिलाओं को दोहरी या तिहरी भूमिका निभानी पड़ती है। वे परिवार और कार्यक्षेत्र दोनों में जिम्मेदारियों का बोझ उठाती हैं, जिससे उन्हें मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है और इस तनाव का प्रभाव उनकी कार्यक्षमता पर पड़ता है। यदि परिवार का सहयोग मिल जाए, तो कामकाजी महिलाओं को अपने कार्यक्षेत्र में अधिक सफलता मिल सकती है और वे अपने पारिवारिक दायित्वों को भी सही ढंग से निभा सकती हैं। इसलिए पारिवारिक सहयोग महिला सशक्तिकरण के लिए बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे महिला की कार्यक्षमता और आत्मविश्वास दोनों में वृद्धि होती है। समाज में आज महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावी ढंग से अपनी भूमिका निभा रही हैं। शिक्षा और तकनीकी क्षेत्र में हो रहे बदलावों ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके अलावा, कई स्वयंसेवी संस्थाएं और एनजीओ भी महिलाओं को समाज की मुख्यधारा में जोड़ने का काम कर रहे हैं। हालांकि, इन प्रयासों के बावजूद महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया अभी भी

अधूरी है। महिलाओं को समान अधिकार, अवसर, और सम्मान की प्राप्ति के लिए समाज को और भी अधिक प्रयास करने होंगे।

❖ **नारी सशक्तिकरण हेतू प्रयास:**

नारी सशक्तिकरण की दिशा में अगर सही प्रयास करना हो, तो उसे राष्ट्रीय विकास का मुद्दा बनाया जाना चाहिए। महिलाओं की अनिवार्य शिक्षा एवं शिक्षित महिलाओं के लिए स्वरोजगार योजना चलाए एवं इसके अन्तर्गत निम्न ब्याज दर पर विभिन्न तरह के स्वरोजगार योजनाओं से महिला समुदाय को आर्थिक निर्भरता प्रदान किये जाने की व्यवस्था की जाए, ताकि भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी स्पष्टतः दिखे। कुछ वर्ष पहले हमने आरक्षण की मांग को लेकर जाटों द्वारा किए गए भीषण विरोध-प्रदर्शन आंदोलन देखा। मेरा मानना है कि मौजूदा संदर्भ में, आरक्षण का पहला हकदार महिला समुदाय है। जबतक, सामाजिक क्रियाकलापों के हरेक क्षेत्र में महिलाओं को संविधान के तहत पचास फीसदी आरक्षण नहीं मिलता, तबतक इस क्षेत्र के उत्थान के लिए किए जाने वाले सारे प्रयास बेमानी साबित होंगे। अभिभावकों को शिक्षित किया जाए कि शिक्षा का अवसर सारे बच्चों के लिए बराबर है। महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में वर्तमान में कई महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। सरकार ने बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओं जैसे अभियानों के माध्यम से लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने और लैंगिक असमानता को समाप्त करने का प्रयास किया है। इसके अलावा, महिला आरक्षण बिल और महिला सुरक्षा योजनाएँ महिलाओं की राजनीति और समाज में भागीदारी को बढ़ावा देने का काम कर रही हैं। महिलाओं के लिए विशेष शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण, और आर्थिक सहायता योजनाएँ, जैसे स्वयं सहायता समूह (SHG) और 'स्टेंडअप इंडिया' जैसी पहलें, महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उन्हें व्यावसायिक क्षेत्रों में अवसर देने के लिए चल रही हैं। इसके साथ ही, महिलाओं के खिलाफ हिंसा और भेदभाव के खिलाफ सख्त कानूनी कदम उठाए गए हैं, जैसे महिला सुरक्षा कानून और समान वेतन के अधिकार की दिशा में काम। इसके अलावा, महिला स्वास्थ्य और कल्याण के लिए भी कई योजनाएँ लागू की गई हैं, जैसे जननी सुरक्षा योजना। इन सभी प्रयासों के माध्यम से महिलाओं को शिक्षा, सुरक्षा, और आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करने की दिशा में सकारात्मक बदलाव आ रहा है, जिससे महिलाएँ अब समाज के हर क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

❖ **नारी सशक्तिकरण के समक्ष चुनौतियाँ:**

महिला सशक्तिकरण की दिशा में कई सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन इसके बावजूद विभिन्न चुनौतियाँ सामने आती हैं, जो महिलाओं की प्रगति और अधिकारों को बाधित करती हैं।समाज में गहरी जड़ें जमा चुकी लैंगिक असमानता एक बड़ी चुनौती है। महिलाएँ अक्सर पुरुषों के मुकाबले शिक्षा, रोजगार और समाजिक प्रतिष्ठा में पिछड़ी हुई होती हैं। पारंपरिक सोच और सांस्कृतिक मान्यताएँ महिलाओं को उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने से रोकती हैं, जिससे उनका सशक्तिकरण मुश्किल हो जाता है।भारत में कई ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में लड़कियों को शिक्षा के समान अवसर नहीं मिल पाते। पारिवारिक दबाव, बाल विवाह, और आर्थिक समस्याएँ लड़कियों की शिक्षा में रुकावट डालती हैं। शिक्षा की कमी महिलाओं के सशक्तिकरण में एक बड़ी बाधा है, क्योंकि शिक्षा ही महिलाओं को आत्मनिर्भर और समाज में बराबरी की स्थिति दिला सकती है। महिलाओं की बड़ी संख्या आज भी आर्थिक रूप से पुरुषों पर निर्भर है। कई महिलाएँ रोजगार के अवसरों से वंचित हैं या वेतन असमानता का सामना करती हैं। महिलाओं को अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिए कई बार सामाजिक और पारिवारिक दबावों का सामना करना

पड़ता है। भारत में कई सामाजिक और सांस्कृतिक कुरीतियाँ हैं, जैसे बाल विवाह, दहेज प्रथा, और घरेलू हिंसा, जो महिलाओं को सशक्त होने से रोकती हैं। पारंपरिक परिवार संरचनाएँ और पुरानी सोच महिलाओं के विकास में बाधक बनती हैं और उन्हें अपनी आवाज उठाने से रोकती हैं। महिलाओं के खिलाफ हिंसा, उत्पीड़न और यौन शोषण एक गंभीर समस्या है। घर से बाहर महिलाओं की सुरक्षा की कमी और सार्वजनिक स्थानों पर हिंसा महिलाओं के सशक्तिकरण के रास्ते में बड़ी रुकावट है। इसके कारण कई महिलाएँ स्वतंत्र रूप से काम या शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ होती हैं। महिलाओं को स्वास्थ्य से संबंधित कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जैसे गर्भवती महिलाओं के लिए उचित चिकित्सा देखभाल की कमी, मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता की समस्या, और सही पोषण की कमी। इन समस्याओं का समाधान न होने से महिलाओं का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है, जो उनके सशक्तिकरण में बाधक बनता है। भारत में महिला राजनीतिक नेतृत्व की कमी भी एक बड़ी चुनौती है। हालांकि महिला आरक्षण बिल और अन्य उपायों के बावजूद, राजनीति में महिलाओं की भागीदारी अभी भी काफी कम है। इससे निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में महिलाओं की आवाज का अभाव है, और वे अपने अधिकारों और मुद्दों को उचित तरीके से प्रस्तुत नहीं कर पातीं। कुछ स्थानों पर महिलाओं के खिलाफ भेदभावपूर्ण कानून और प्रथाएँ मौजूद हैं, जैसे संपत्ति अधिकारों में असमानता और वसीयत के मामलों में महिलाओं को वंचित करना। ये प्रथाएँ महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में बाधा डालती हैं। इन सभी चुनौतियों के बावजूद, महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं, और यदि समाज, सरकार और अन्य संगठनों का सहयोग बढ़े, तो इन समस्याओं को हल किया जा सकता है और महिलाओं को समान अधिकार और अवसर मिल सकते हैं।

❖ **नारी सशक्तिकरण हेतू सुझाव:**

महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं। सबसे पहले, महिलाओं की शिक्षा को प्राथमिकता देना आवश्यक है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, ताकि उन्हें समान अवसर मिल सके। इसके अलावा, महिला सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सख्त कानूनों और त्वरित न्याय प्रणाली की जरूरत है, जिससे महिलाएँ समाज में स्वतंत्र रूप से घूम सकें और काम कर सकें। महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वरोजगार और कौशल विकास कार्यक्रमों का विस्तार करना चाहिए, साथ ही उन्हें वित्तीय सहायता देने के लिए विभिन्न योजनाओं को बढ़ावा देना चाहिए। लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए समाज में जागरूकता फैलाना जरूरी है, ताकि महिलाओं और पुरुषों के बीच भेदभाव खत्म हो सके। कानूनी अधिकारों के बारे में महिलाओं को जानकारी देने के लिए विशेष कार्यक्रम चलाने चाहिए, ताकि वे अपनी समस्याओं का समाधान आसानी से प्राप्त कर सकें। इसके अलावा, महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण सुनिश्चित करने के लिए आरक्षण और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन किया जाना चाहिए। समाज में महिलाओं के खिलाफ चल रही कुरीतियों, जैसे बाल विवाह और घरेलू हिंसा, को समाप्त करने के लिए सख्त कदम उठाए जाने चाहिए। अंततः, महिलाओं के स्वास्थ्य और मानसिक कल्याण के लिए समर्पित योजनाएँ बनाई जानी चाहिए, ताकि वे शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहें। इन सभी उपायों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हो सकती है।

❖ **निष्कर्ष:**

भारत में महिला सशक्तिकरण एक सतत प्रक्रिया है, जो समय के साथ लगातार विकसित हो रही है। आज के दौर में महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, और समाजिक भागीदारी के कई नए अवसर मिल रहे हैं। सरकार द्वारा कई योजनाएँ, जैसे ष्बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओष् और महिला सुरक्षा कानून, महिलाओं को समान अधिकार और अवसर प्रदान करने की दिशा में सकारात्मक कदम हैं। हालांकि, कई चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, जैसे लैंगिक भेदभाव, आर्थिक निर्भरता और महिला सुरक्षा की समस्याएँ, जिनसे निपटना जरूरी है। इन समस्याओं के बावजूद, समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार हो रहा है, और उनके लिए कई क्षेत्र खुले हैं, जिनमें वे नेतृत्व और सशक्त रूप से अपना योगदान दे रही हैं। महिला सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़ने के लिए सभी स्तरों पर जागरूकता, शिक्षा, और समानता के प्रयासों की निरंतर आवश्यकता है, ताकि हर महिला को अपने सपनों को पूरा करने और समाज में समान सम्मान प्राप्त करने का अवसर मिल सके। तुलसीदास जी के निम्नांकित दोहे को यदि समाज आत्मसात कर ले, तो हमें पूर्ण विश्वास है कि आधी आबादी की समुचित प्रगति को कोई भी बाधा नहीं रोक पाएगी- *"नारी निन्दा मत करो, नारी नर की खान। "नारी से नर ऊपजे, ध्रुव-प्रह्लाद समान।।"*

संदर्भ-सूची

1. पाठक, कल्पना. (2012). *नारी एक शक्ति.* जेईसी पब्लिकेशन, पृष्ठ 82.
2. मिश्र, सुप्रिया लक्ष्मी. (2016). *भारतीय नारी.* क्रिसेंट पब्लिशिंग कोरपोरेशन, पृष्ठ 97.
3. खुराना, एवं चैहान. (2020). *भारतीय इतिहास में महिलाएं.* एलएनए बुक्स, पृष्ठ 104.
4. बिम्ब्रा (2017). *नारीः समस्या और समाधान.* नमन प्रकाशन, पृष्ठ 124.